

## अखबारों के 'सेवक' और बाल मन के पारखी: डॉ. निरंकार देव



साहित्य की दुनिया में कुछ नाम ऐसे होते हैं, जो केवल कागजों पर नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के चरित्र में जीवित रहते हैं। बरेली की साहित्यिक विरासत के ऐसे ही एक अनमोल रत्न थे डॉ. निरंकार देव सेवक, जिसने अभावाँ के बीच रहकर भी बाल साहित्य के माध्यम से बरेली का मान पूरे भारतवर्ष में बढ़ाया। यह कहानी है एक विद्रोही कवि के कोमल बाल साहित्यकार बनने की, एक समर्पित मित्र की और एक ऐसे साधक की जिसने अंत तक अपनी कलम का साथ नहीं छोड़ा। बरेली के इस बाल साहित्यकार की शख्सियत से रू-ब-रू करा रही है।

**रतन सिंह गुर्जर की विशेष रिपोर्ट...**

**सादगी और सिद्धांतों का अनूठा संगम-डॉ.** निरंकार देव सेवक का जीवन किसी खुली किताब की तरह था, जिसके हर पन्ने पर सादगी और अनुशासन की इबारत लिखी थी। बरेली के सैदपुरिया मोहल्ले में जन्मे सेवक जी के भीतर साहित्य के संस्कार अपने पिता मूंशी रामभरोसे लाल 'सेवक' से विरासत में मिले थे। पेशे से अग्रणी वकील होने के बावजूद उनका हृदय साहित्य के लिए धड़कता था। उनकी सादगी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्हें खाने में कभी स्वाद की परवाह नहीं रही, उनके लिए भोजन केवल शरीर चलाने का साधन था। **बचन जी से आत्मीय रिश्ता-** साहित्यिक गलियारों में सेवक जी और महाकवि हरिवंशराय बचन की मित्रता के किस्से आज भी मशहूर हैं। यह सेवक जी ही थे, जिन्होंने ज्ञान प्रकाश जौहरी के साथ मिलकर बरेली में बचन जी और रेजी पूरी की मुलाकात और फिर सगाई तय करवाई थी। बचन जी उन्हें 'भाई साहब' कहते थे और उन्होंने सेवक

### पारिवारिक त्रासदी और सेवा की मिसाल

सेवक जी का अंतिम समय काफी कष्टपूर्ण रहा। आंखों की रोशनी चली जाने के कारण उन्हें अपनी थाली का खाना तक नहीं दिखता था, लेकिन उनकी पुख्वां पुष्प सेवक ने एक बेटी का धर्म निभाते हुए अंत तक अपने हाथों से उन्हें भोजन कराया। साल 1994 में सेवक जी का निधन हुआ और उसके बाद परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। 1999 में उनके पुत्र प्रदीप और पत्नी का देहांत हुआ और बाद में पोते पुनीत को भी निधन ने छीन लिया। आज सेवक जी का वह विशाल 2000 गज का बंगला भले ही वक्त की मार से छोटे से हिस्से में सिमट गया हो, लेकिन उनकी रचनाओं की गूंज आज भी हर उस बच्चे के मन में है, जिसमें 'दूध जलेबी' या 'ईसपी की गाथाएं' पढ़ी हैं। डॉ. निरंकार देव सेवक आज भी हमारे बीच अपनी कालजयी रचनाओं और अपनी बेबाक प्रगतिशील सोच के रूप में जीवित हैं।

जी को करीब 250 पत्र लिखे। बचन जी का स्नेह इतना था कि वे अक्सर बरेली आकर बसने की इच्छा व्यक्त करते थे। **अखबारों का जुनून और समय की धारा-** सेवक जी का दिन सुबह 5 बजे शुरू होता था और घर में 14 अखबारों का अंबार लगाता था। जिला जेल के सामने वाले नाले के किनारे अखबार पढ़ते हुए टहलना उनका नियमित क्रम था। वे पढ़ने में इतने मशगूल हो जाते कि उन्हें आसपास की दुनिया का होश नहीं रहता था। यही एकाग्रता उनकी लेखनी में भी दिखती थी। विद्रोह से वैज्ञानिक चेतना तक सेवक जी ने अपने लेखन की शुरुआत 'चिंगारी' जैसे विद्रोही कविता संग्रह से की थी। उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी के दौर में संतान न पैदा करने का कठिन संकल्प लिया था। हालांकि बाद में पारिवारिक दबाव में उन्होंने गृहस्थ जीवन को अपनाया। बाल साहित्य में उन्होंने एक नई चेतना फूँकी। उन्होंने पौराणिक कथाओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखा। वे कहते थे कि धर्म और रूढ़ियाँ बच्चों के मानसिक विकास में बाधा नहीं बननी चाहिए। उनके 36 प्रकाशित संग्रह आज भी हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।



अजी थोड़ा कम लगा लुंगा अब तराजू पर से कम से कम उतरवाइए तो मत। बड़ी मुश्किल से इन लेखकों को तराजू पर चढ़ने को मिलाता है वो भी सब जबकि आलोचकों की निगाह न पड़े साहब। मगर इतनी देर में महाराज जी को कवि जी का चोर बाजार का गणित भा चुका था। उन्होंने अपने गले में पड़े गमछे को ताव देकर फटकारा और थोड़ा आगे चलकर कवि जी को आवाज लगाई- "अजी। मैंने कहा कि कुछ जलेबी दही हो जाए अगले रविवार को तो आप और हम मिल ही रहे हैं न चोर बाजार में।" कवि जी मुस्कुराए और लपक के जलेबी-दही के दोने पर टूटते हुए बोले, "क्यों नहीं, क्यों नहीं।"

की फटी रह गई और कान खड़े हो गए, वे हकलाते हुए बोले- "क्या सच में! क्या वहां सरसे में बढ़िया लेखक मिल जाएंगे।" लफ्फाज कवि जी ने मुस्कराते हुए कहा- "और नहीं तो क्या! अरे आप बढ़िया की बात करते हैं, चोर बाजार में एक से एक लेखक मिलेंगे और न सिर्फ बिकने वाले, बल्कि खरीदने वाले भी।" महाराज जी बोले- "वो कैसे?" इस पर कवि जी ने बड़े गर्व से कहा- "अभी पिछले सप्ताह ही आधा किलो परसाई, दो किलो बचन और ढाई सौ ग्राम निराला तोल कर दिए हैं बाजार में, पुरस्कृत लेखकों को किसी से कहिएगा नहीं मैं कविताई करने के साथ-साथ ये काम भी कर लेता हूँ। अब देखना! जब वे इन सबको पानी के साथ खुद के बनाए चूने में गूंध के जब मट्टे पाग के बाजार में बेचेंगे, तो आप भी कहेंगे कि क्या स्वाद है। अजी मैं तो कहता हूँ छोड़िए ये लेखक मंडी के कोने के बाजार को, सीधे चोर मंडी चलते हैं।" महाराज जी ने आव देखा न ताव और लगे मुँहों को ताव देने। बड़ी ऐंठ के साथ वे मंडी के दलाल से बोले- "ए भई। नीचे रख। हमें नहीं चाहिए इतने महंगे लेखक।" दलाल ने तभी कवि जी को घूरते हुए महाराज जी से कहा, "अजी साहब! एक दम से ही मूड बिगड़ गया आपका तो।"

अजी थोड़ा कम लगा लुंगा अब तराजू पर से कम से कम उतरवाइए तो मत। बड़ी मुश्किल से इन लेखकों को तराजू पर चढ़ने को मिलाता है वो भी सब जबकि आलोचकों की निगाह न पड़े साहब। मगर इतनी देर में महाराज जी को कवि जी का चोर बाजार का गणित भा चुका था। उन्होंने अपने गले में पड़े गमछे को ताव देकर फटकारा और थोड़ा आगे चलकर कवि जी को आवाज लगाई- "अजी। मैंने कहा कि कुछ जलेबी दही हो जाए अगले रविवार को तो आप और हम मिल ही रहे हैं न चोर बाजार में।" कवि जी मुस्कुराए और लपक के जलेबी-दही के दोने पर टूटते हुए बोले, "क्यों नहीं, क्यों नहीं।"

## क्यों स्मार्ट दिखना चाहते हैं अधेड़ हिन्दुस्तानी



दिनों में सामान्य कामकाज पर लौट आते हैं। सर्जरी से पहले डॉक्टर पूरी जांच करते हैं। ब्लड टेस्ट, हार्ट चेकअप और मेडिकल हिस्ट्री देखी जाती है। सर्जरी जनरल एनेस्थीसिया में होती है और इसमें दो से चार घंटे लगते हैं। बाद में हल्का सूजन और चोट के निशान रह सकते हैं, जो धीरे-धीरे ठीक हो जाते हैं। अमेरिका और यूरोप में यह हॉलीवुड और फैशन जगत की कई हस्तियों का पसंदीदा विकल्प बन चुका है। सोनजा मॉर्गन, रिकी लेक, मैकेजी वेस्टमोर, जैकी हेरी जैसी सेलिब्रिटीज ने भी इसके नेचुरल रिजल्ट्स की तारीफ की। क्रिस जेनर जैसी हस्तियों के साथ भी इसकी चर्चा रहती है। भारत में भी कई बड़े सितारों ने इस सर्जरी को करवाया है, पर वे इस बात को अज्ञात कारणों से सार्वजनिक नहीं करते। अमेरिका और यूरोप में अधेड़ और उम्र दराज लोग डीप प्लेन फेसलिफ्ट सर्जरी का लाभ लंबे समय से ले रहे हैं। वहां बहुत सारे हॉलीवुड सितारों भी इस सर्जरी को करवाने के बाद अपने करियर को चमका रहे हैं। भारत में भी अब जागरूकता बढ़ रही है। दिल्ली, मुंबई, बंगलूरु और चंडीगढ़ जैसे शहरों में अच्छे अस्पताल उपलब्ध हैं। डॉक्टर सलाह देते हैं कि सर्जरी चुनने से पहले हमेशा योग्य और अनुभवी सर्जन से ही संपर्क करें। आज के समय में दिखावे और आत्मविश्वास का महत्व बहुत बढ़ गया है। डीप प्लेन फेसलिफ्ट सर्जरी उन लोगों के लिए एक अच्छा विकल्प बनकर उभरी है, जो अपनी उम्र को महसूस नहीं करना चाहते। यह सर्जरी सिर्फ चेहरे को नहीं, बल्कि जीवन के नए अध्याय को खोलती है। अगर आप भी 45 साल के पार हैं और लगता है कि चेहरा थका हुआ दिख रहा है, तो एक अच्छे सर्जन से सलाह जरूर लें। सही निर्णय से आपका आत्मविश्वास नया जोश पा सकता है।

लोअर मिडिल क्लास परिवारों की महिलाएं और पुरुष भी इसे करवा रहे हैं। खास बात यह है कि बदलाव बहुत सूक्ष्म, लेकिन असरदार होता है। आत्मविश्वास बढ़ता है, लेकिन कोई यह नहीं कह पाता कि "इन्होंने कुछ करवाया है।" दोस्त और परिवार वाले बस इतना कहते हैं कि आप बहुत तर्रोताजा और खुश दिख रहे हैं। विशेषज्ञों के पास परामर्श के लिए हर वर्ग से लोग आ रहे हैं। सरकारी नौकरी वाले, प्राइवेट सेक्टर के मैनेजर, बिजनेसमैन और परेल् महिलाएं सभी इसमें रुचि ले रहे हैं। लोग अब कॉन्सेप्टिक सर्जरी को दिखावा नहीं, बल्कि अपने इमेज, करियर और वेल-बीइंग में निवेश मानते हैं। उम्र तो सबको लगती है, यह सर्जरी बस उस मैदान को थोड़ा बराबर कर देती है। इसके अलावा, यह सर्जरी गर्दन की त्वचा को भी टाइट करती है, जिससे डबल चिन जैसी समस्या कम हो जाती है। चेहरे पर थकान का भाव कम होता है और आंखों के नीचे की सूजन भी घटती है। रिक्वैरि का समय भी अब पहले से काफी कम हो गया है। ज्यादातर लोग 10-14

# शब्द रंग



## बावनी इमली : वह पेड़ जिस पर क्रांतिकारियों को दी गई थी फांसी



हालत हो गई थी कि उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि इस वीर से युद्ध कैसे किया जाए। कभी-कभी ही उनके क्रांतिकारी दिखते और जब दिखते तो इतने संगठित तरीके से कि अंग्रेजों के पास मौका ही न बचता उनके वार से बचने के लिए और फिर गायब, सुदूर अपनी गुफा में। अंग्रेजों ने उन्हें 'डाकू' कहा, जो इतिहास में असहमति को छोटा करने का पुराना तरीका रहा है। आखिरकार भीतर से मिली एक सूचना ने उन्हें पकड़वा दिया। इसके बाद 28 अप्रैल 1858 का दिन आया, जब खजुहा में एक इमली के पेड़ के नीचे कर्नल क्रिस्टाडल द्वारा जोधा सिंह सहित 52 क्रांतिकारियों को फांसी दे दी गई। जोधा सिंह अट्टेय्या वही क्रांतिकारी थे, जिन्होंने कर्नल नील, मेजर-जनरल हैवलॉक और रेनाल्ड जैसे क्रूर अंग्रेज अफसरों को चकमा दे दिया था और कर्नल पॉवेल का सर धड़ से अलग करके उनके छावनी भेज दिया था। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। स्थानीय लोगों की मानें तो अंग्रेजों ने शवों को ले जाने की अनुमति नहीं दी और लंबे समय तक उस स्थान पर पहरा रहा। 37 दिनों तक वह शव उसी पेड़ पर लटकते रहे और अपने क्रांतिकारी होने की सजा भुगतते रहे। जब शव सड़ने लगे, तो अंग्रेजों को जबरन उस इमली के पेड़ के पास से अपनी फौज हटानी पड़ी।

फिर ठाकुर भगवान दास ने 4 अप्रैल 1858 को इन अमर सपूतों का अंतिम संस्कार किया। समय बीतता गया और वह स्थान धीरे-धीरे एक स्मृति में बदलता गया। आज भी वहां इमली का पेड़ खड़ा है, जिस का तस, शायद पहले से अधिक शांत, जितना उनका इतिहास हो गया है। इतिहास का अपना एक स्वभाव होता है, वह याद रखने के मामले में बहुत निरंदायी है, जिनके पास अपने समय के लेखक, कवि और इतिहासकार होते हैं, वे बड़े अक्षरों में दर्ज हो जाते हैं, बाकी लोग जगहों, पेड़ों और किस्सों में छूट जाते हैं। यही कारण है कि दिल्ली की एक छोटी घटना पूरे देश में फैल जाती है और किसी सुदूर गांव की बड़ी घटना अपने इलाके तक सीमित रह जाती है। फतेहपुर के बिंदकी स्थित 'बावनी इमली' एक ऐसा ही स्मारक है, जहां एक पेड़ के नीचे खड़े होकर आप समझ सकते हैं कि आजादी की कहानी सिर्फ कुछ नामों की नहीं, बल्कि अनगिनत अनसुने लोगों की भी है। ऐसे वीरों को शत-शत नमन करते हैं, जिनके कारण हम आजादी की सांस ले रहे हैं। अगर आप अपने वजूद को पहचानना चाहते हैं, अपने देश की आजादी की लौ को महसूस करना चाहते हैं, तो एक बार बिंदकी स्थित बावनी इमली के दर्शन जरूर करें और क्रांतिकारियों को प्रणाम करें।

### जॉब का पहला दिन

## कर्तव्य के साथ सेवा की शुरुआत



वर्ष 2018 का वह दिन आज भी मेरी स्मृति में ताजा है, जब मैंने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की जालौन जनपद स्थित कोच शाखा में एग्रीकल्चर एवं वित्त अधिकारी के रूप में अपने जीवन की नई शुरुआत की। वह मेरे जीवन का एक ऐसा मोड़ था, जहां उत्साह, जिज्ञासा और जिम्मेदारी-तीनों एक साथ मेरे मन में उमड़ उड़ थे। सच कहूँ तो उस दिन मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं किसी नई दुनिया में प्रवेश कर रहा हूँ।



सुबह जब मैं पहली बार औपचारिक रूप से कार्यालय पहुंचा, तो दिल की धड़कन कुछ तेज थी। नए सहकर्मी, नया माहौल और अनगिनत अपेक्षाएं- सब कुछ मेरे सामने था। शाखा प्रबंधक और अन्य कर्मचारियों ने मेरा आत्मीय स्वागत किया, जिससे मेरे भीतर का संकोच कुछ कम हुआ। धीरे-धीरे मैंने अपने कार्यक्षेत्र को समझना शुरू किया। फाइलों का ढेर, कंप्यूटर स्क्रीन पर खुली बैंकिंग प्रणाली और ग्राहकों की भीड़- यह सब मेरे लिए एक नया अनुभव था। पहले ही दिन ग्राहकों से सीधे संवाद का अवसर मिला। कोई किसान अपनी फसल के लिए ऋण चाहता था, तो कोई व्यक्ति अपनी आर्थिक समस्या लेकर आया था। उनकी आंखों में उम्मीद और विश्वास साफ झलक रहा था। जब मैं उनकी समस्याएं सुनता और समाधान की दिशा में कदम बढ़ाता, तो मेरे भीतर एक अद्भुत संतोष का भाव उत्पन्न होता। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मैं केवल एक नौकरी नहीं कर रहा, बल्कि समाज की सेवा के अपने बचपन के सपने को साकार कर रहा हूँ। विशेष रूप से किसानों के साथ संवाद ने मेरे मन को गहराई से छुआ। उनकी मेहनत, संघर्ष और आशाओं को समझते हुए मैंने महसूस किया कि मेरी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। सही मार्गदर्शन और सहयोग से मैं उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता हूँ। यह सोच मेरे भीतर एक नई ऊर्जा और समर्पण का संचार कर रही थी।

दिन के अंत तक, थकान जरूर थी, लेकिन उससे कहीं अधिक संतोष और आत्मविश्वास था। मैंने महसूस किया कि यह केवल शुरुआत है- एक ऐसे सफर की, जिसमें मुझे न केवल एक जिम्मेदार अधिकारी बनाया, बल्कि एक संवेदनशील इंसान भी, जो समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझता है और उन्हें पूरी निष्ठा के साथ निभाने का प्रयास करता है। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो वह पहला दिन मेरे जीवन की सबसे प्रेरणादायक यादों में से एक बन चुका है। उसने मुझे न केवल एक जिम्मेदार अधिकारी बनाया, बल्कि एक संवेदनशील इंसान भी, जो समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझता है और उन्हें पूरी निष्ठा के साथ निभाने का प्रयास करता है।

### कुछ अलग

## लेखकों का बाजार

आज के वक्त में जबकि सारी दुनिया ही एक बाजार बनती जा रही हो, तो फिर हमारे साहित्य की दुनिया ही भला कैसे इस बाजार 'भाव' से अछूती रह सकती है। यहां लेखकों के भाव स्थापित करने से लेकर उन्हें गिराने और उठाने तक का कार्य बड़ी ही सजीवता के साथ किया जाता है। ये सभी क्रियाएं साहित्यिक उत्थान की आड़ में इतनी चतुराई से की जाती हैं कि दाएं हाथ को बाएं हाथ की खबर तक न लग पाए। यही उपलब्धि असली महानता है, जोकि सिर्फ लेखन भर से नहीं आती। पिछले जमाने के साहित्य और साहित्यकारों ने भले ही दुनिया को गूढ़ दर्शन दिया हो मगर आज के साहित्य और साहित्यकारों ने न सिर्फ बाजार दिया है, बल्कि लेखक बनाने की विधि से लेकर, किताबें बेचने-खरीदने के लाभप्रद हथकंडे, उन्नत किस्म की चौय प्रणाली आदि के अतिरिक्त, लेखकों की खरीद, फरोख्त तक का मार्ग प्रशस्त किया है। ये साहित्य का नवीन उन्नयन काल है।

### विवेक शुक्ला

भारत में एक अलग तरह की क्रांति दस्तक दे रही है। मध्यम आयु वर्ग के पुरुष और महिलाएं अब अपने आपको अधिक आकर्षक और आत्मविश्वासपूर्ण बनाने के लिए चेहरे की एडवांस सर्जरी करवा रहे हैं। समय के साथ बढ़ती उम्र, व्यस्त जीवनशैली और बदलते सामाजिक-व्यावसायिक माहौल में ये लोग अब केवल स्वस्थ रहने पर ही नहीं, बल्कि बाहरी रूप-सौंदर्य को बनाए रखने पर भी गंभीरतापूर्वक ध्यान दे रहे हैं। इस सर्जरी को डीप प्लेन फेसलिफ्ट सर्जरी कहते हैं। पहले यह सर्जरी सिर्फ बड़े-बड़े सितारों तक ही सीमित थी, लेकिन अब मिडिल क्लास भारतीय भी इसके लिए स्पेशलिस्ट डॉक्टरों से सलाह ले रहे हैं। अब

इसी क्रम में पिछले दिनों एक किस्सा कुछ यूँ हुआ कि हमारे प्रिय, आत्मीय और धुरंधर लेखक महाराज एक दिन लेखन मंडी के किनारे वाली दुकान पर लेखक तौलवा रहे थे कि वहां लफ्फाज कवि जी आ धमके, आते ही उन्होंने तौलियाँ चढ़ाते हुए लेखक महाराज को टोका, "अरे महाराज जी! कितने रुपये किलो लिए, बहुत महंगे नहीं तौलवा लिए आपने!" महाराज जी ने पूरी बत्तीसी चमकाते हुए कहा, "अजी साहब! क्या करें, किलो दो किलो लेखक घर में रखने पड़ते हैं। अब क्या महंगा और क्या सस्ता, जो ये लिखकर दे देते हैं उसी से लेखन की दाल-रोटी चलती रहती है साहब, वरना इतनी महंगाई में भला कौन खुद लिखके कुछ देता है। न इतना समय है किसी के पास और न इतना भेजा, जो पका-पकाया माल मिल जाता है उसी को थोड़ा और पकाकर बाजार में अपने नाम से ठेल देते हैं।" लफ्फाज कवि तो ठहरे ही शब्दों के जादूगर सो वे पुनः महाराज जी से बोले, "अरे! इतनी महंगाई में कहां आप इन महंगे लेखकों के चक्कर में पड़े हैं। अरे मेरी मानों तो अबकी रविवार मेरे साथ साहित्य के चोर बाजार चलना। थोड़ी भीड़-भाड़ जरूर रहती है वहां मगर औने-पौने दामों पर ही चोखा माल मिल जाता है।" साहित्य के चोर बाजार की बात सुनते ही महाराज जी की आंखें फटी

### विवेक शुक्ला

भारत में 40 से 65 साल के पुरुष और महिलाएं इस सिद्ध सर्जरी की तरफ तेजी से बढ़ रहे हैं। यह सर्जरी चेहरे को नाटकीय तरीके से नहीं, बल्कि बहुत नेचुरल और सूक्ष्म तरीके से जवान बनाती है। लोग अपनी उम्र के साथ आने वाली झुर्रियाँ, ढीली त्वचा और थकी हुई लुक से छुटकारा पाना चाहते हैं। इस तकनीक को भारत में आगे बढ़ाने वाले दिल्ली के मशहूर फेशियल प्लास्टिक सर्जन डॉ. प्रतीक शर्मा, जो पहले अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) से जुड़े थे और आजकल राजधानी के एक अस्पताल में कार्यरत हैं, ने एक सेमिनार में बताया कि गहरी लेयर्स को लिफ्ट करने से रिजल्ट ज्यादा लंबे समय तक रहते हैं और चेहरा ज्यादा नेचुरल और संतुलित दिखता है। वे कहते हैं, "ये सिर्फ झुर्रियाँ मिटाने की बात नहीं है। ये लोगों को आत्मविश्वास वापस लौटाने और दुनिया के सामने नए जोश के साथ खड़े होने में मदद करता है।" डीप प्लेन फेसलिफ्ट आखिर है क्या? साधारण फेसलिफ्ट सर्जरी में सिर्फ ऊपरी स्किन को खींचा जाता है, लेकिन डीप प्लेन फेसलिफ्ट उससे कहीं आगे जाती है। इसमें उम्र के साथ ढीले पड़ चुके मसल्स, फैट पैड्स और कॉन्ट्रैक्ट टिश्यू को भी ध्यान से संभाला जाता है। सर्जन इन सबको एक साथ एक यूनिट के रूप में ऊपर उठाता है। इसमें मिड-फेस, जबड़ा, गाल और गर्दन सब शामिल होते हैं। इससे चेहरा स्मूद हो जाता है, नाक से मुंह तक की गहरी लकीरें कम हो जाती हैं और चेहरे में फिर से जवानि वाली चमक लौट आती है। यह प्रक्रिया चेहरे की गहराई में काम करती है, इसलिए नतीजा बहुत प्राकृतिक लगता है। वहीं एक अन्य प्लास्टिक सर्जन बताती हैं कि यह प्रोसीजर अब अमीरों की लग्जरी नहीं रह गई है। अब

